CCS Haryana Agricultural University
Regional Research Station, Karnal
Advisory for sugarcane crop to the farmers March 1-15, 2022

- मोढ़ी फसल की कटाई जमीन की सतह के साथ करें व जल्द ठूंठों को हटा दें।
- मोढ़ी फसल में 30 कि. ग्रा. नाइट्रोजन (यूरिया 65 कि.ग्रा.), 20 कि.ग्रा. फास्फोरस (सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 कि.ग्रा) व 20 कि. ग्रा. पोटाश (मुरेट ऑफ पोटाश 35 कि.ग्रा.) प्रति एकड़ पहली गोड़ाई करते समय पोरें।
- बसंत कालीन बीजाई का उपयुक्त समय 15 फरवरी से मार्च अन्त तक है। अधिक उपज के लिए अगेती किस्में सीओएच 160ए सीओ 0118 एवं सीओ 15023 की बोवाई करें।
- रोगी खेत में कम से कम तीन साल तक फसल–चक्र अपनाएं।
- बिजाई से पहले ही मिटटी की जांच अवश्य करवाएं और मिटटी परीक्षण के आधार पर ही खेत में उर्वरक का प्रयोग करे।
- नौलफ फसल में 20 कि.ग्रा. फास्फोरस (सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 कि.ग्रा.), साथ ही 10 कि.ग्रा. जिंक सलफेट, 20 कि.ग्रा पोटाश (मुरेट ऑफ पोटाश 35 कि.ग्रा.) व 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (यूरिया 45 कि.ग्रा.) प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें। रस की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए 10 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ का प्रयोग करें।
- स्वस्थ गन्ने के उपर का दो तिहाई भाग बिजाई के लिए प्रयोग करें। एक एकड़ के लिए 35 से 40 क्विंटल या 35000 दो ऑखों वाली या 23000 तीन ऑखों वाली तिरछी कटी पोरियों की आवश्यक्ता होती है।
- दवाई के घोल से निकाली दो ऑख वाली पोरियों का पहले से तैयार खुडों मे 2 फुट की दूरी वाली लाइनों में 5 पोरियां तथा 2.5 फुट वाली लाईनों में 7 पोरियां व 3 फुट वाली लाईनों में 9 पोरियां प्रति मीटर रखें।
- आधा खूड़ सिंचाई विधि में गन्ने का जमाव एक समान, जल्दी व ज्यादा (60–70 प्रतिशत) होता है फलस्वरुप पैदावार ज्यादा होती है।
- कीट व रोग रहित बीज का चुनाव करें।
- बीज के लिए उपयुक्त गन्ने का नम गर्म शोधन मशीन से 54 डिग्री से. पर दो घंटा तक उपचारित करें।
- बीज गन्ना को मैनकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर के घोल में 4–5 मिनट तक डूबोकर बीज उपचार करें। एक एकड़ खेत की बिजाई के लिए पोरियों के उपचार के लिए 100 लीटर पानी में तैयार घोल पर्याप्त है।
- दीमक, कंसुआ व जड़ वेधक से बचाव हेतु बिजाई के समय प्रति एकड़ 2.5 लीटर क्लोरपायरिफॉस 20 ई सी या 600 मि.ली. फिपरोनिल 5 एस सी का 600–1000 लीटर पानी में घोल बनाकर फव्वारे से छिड़कें या 150 मि.ली. इमिडाक्लोप्रिड 200 एस एल को 250–300 लीटर पानी में मिलाकर खूडों में पोरियों के ऊपर नैपसैक पंप से छिड़काव करें। किसान 10 कि.ग्रा. फिपरोनिल 0.3 जी का खूडों में भुरकाव भी कर सकते हैं। उपचार के तुरंत बाद सुहागा लगाकर खूडों को बंद कर दें।
- खरपतवारों की रोकथाम के लिए 1.6 कि.ग्रा. एट्राजीन–50 घुलनशील पाऊडर प्रति एकड़ 250–300 लीटर पानी में घोलकर बिजाई के तुरंत बाद छिड़काव करें। दवाई के छिड़काव के समय भूमि की ऊपरी सतह में उचित मात्रा में नमी का होना अति आवश्यक है।